संत. अलोशियस महाविद्यालय (स्वायत्त), मंगलूरु

अंतर महाविद्यालयी हिंदी उत्सव

प्रेरणा – २०१८

एक कदम अपनी पहचान की ओर

संपादक समिति

बाएँ से बैठे :
श्रीमती. संध्या यु सिर्सिकर,, सुश्री. रोइसी रेखा ब्रागस, डॉ. मुकुन्द प्रभु, श्री. एम. ए. नदाफ़

बाएँ से खड़े :
मुहम्मद शहिम, सुहाना, अनुश्री, रीवा रोड्रिगस, सलमान

संदेश

संपादकीय

रोइसी रेखा ब्राग्स
हिन्दी अध्यापिका

जिन्दगी हसीन है, मुस्कुरा के जियो,

हो रात तो सुबह का इंतजार करो,

वो पल भी आयेगा जिस पल का इंतजार है हम सबको,

बस रब पे भरोसा और कर्म पे विश्वास करो।

जी हाँ ! किसीने सच ही कहा है कि इंतज़ार का फल मीठा होता है। प्रेरणा पत्रिका को सभी पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हुए बहुत खुशी महसूस हो रही है।

संत अलोशियस महाविद्यालय का हिन्दी विभाग सालों से हिन्दी की सेवा करते आया है। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि हर एक साल हिन्दी पढ़नेवालों की संख्या बढ़ रही है। हिन्दी भाषा एक ऐसा साधन है जो अनजान लोगों में भी दोस्ताना बढ़ाती है।

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में अलग–अलग प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था। बड़े उत्साह के साथ विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया है।

प्रेरणा पत्रिका छात्रों के लिखने की प्रतिभा को प्रोत्साहित कर उनके लेखों को प्रकाशित करने के लिए एक सुअवसर प्रदान करती है। विद्यार्थियों ने अपनी इच्छा से लेख लिखे है। इसमें छात्रों की प्रतिभा साफ नज़र आती है। प्रेरणा पत्रिका द्वारा उभरते कवि, लेखक, लेखिकाएँ सामने आ रहे हैं। महाविद्यालय की ओर से आयोजित प्रतियोगिताओं में विजेताओं के लेख को भी इस प्रेरणा पत्रिका में प्रकाशित किया गया है।

प्रेरणा वार्षिक पत्रिका सफल बनाने में अनेक लोगों का परिश्रम है। उन सबका स्मरण करना संपादक होने के नाते मेरा कर्तव्य है।

सबसे पहले मैं उन विद्यार्थियों को धन्यवाद देना चाहती हूँ। जिन्होंने अलग अलग तरीके के लेख लिखकर अपने विचारों को यहाँ प्रस्तुत किया है। इन लेखों को जाँचने में और गलतियों को सुधारने का बहुमूल्य काम हिन्दी संघ के अध्यक्ष श्री महबूबअली अ. नदाफजी एवं श्रीमती संध्याजी ने किया है। इन दोनों को धन्यवाद कहना चाहती हूँ।

हिन्दी संघ के सचिव रीवा रोड्रिगस, उपसचिव शहिम, इस पत्रिका को सुंदर ढंग से सजाकर छपवाया है। आपको भी मैं तहे दिल से धन्यवाद देती हूँ।

कॉलेज के प्राचार्य रे.डा. प्रवीण मार्टिस जी ने हमारे हर कार्य में मार्गदर्शन एवं मदद पहुँचायी और हमारे विभागाध्यक्ष्य डॉ. मुकुन्द प्रभु हर एक काम में हमारा साथ देते हैं और प्रोत्साहन देते हैं। आप दोनों को मैं तहे दिल से धन्यवाद देना चाहती हूँ।

इस पत्रिका को छपवाने में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मदद करनेवालों को मेरा प्यार भरा नमन। धन्यवाद।

Principal's Message

Fr. Dr. Praveen Martis SJ
Principal

Department of Hindi at St Aloysius College (Autonomous) has shown excellence in academics and all other co-curricular activities. Like the name 'Prerana', given to the magazine, the students draw inspiration from it and showcase all their activities held in the academic year 2017-18. 'Prerana' provides a platform to exhibit their talents, their inner aspirations and vision. It's a medium through which the students communicate their deep desire and longings.

We are in a consumeristic and digital world which is a challenge to our traditions and long cherished culture. We need to be deeply rooted in our own culture. Language plays a major role in nourishing a particular culture. In this present scenario our Hindi students continue to give expressions to their thoughts and inner longings through 'Prerana' The members of Hindi faculty encourage the students to read and express their thoughts through writing.

Many of our students do not even glance through daily newspaper leave alone reading a good literature. These habits have to be cultivated and interest must be generated. Creativity and imagination is required to produce a good literature. One has to enjoy both reading and then put their ideas through creative writing. This is precisely the purpose of magazine like 'Prerana'. I congratulate the students and the faculty of Hindi Department for their creative and lively presentation.

विभागाध्यक्ष का संदेश

डॉ. मुकुन्द प्रभु
हिन्दी विभागाध्यक्ष

सूचना प्रौद्योगिकी एवं भूमंडलीकरण के कारण आज पूरी धरती विश्वग्राम के रूप में परिवर्तित हुई है । मार्शल मैक्लूहान ने संचार–क्रांति के प्रभाव को विश्लेषित करते हुए कहा था कि सेटेलाइट सारी धरती को एक गाँव में बदल देगा लेकिन सेटलाइट या कोई और अत्याधुनिक तकनीकी एक साधन भर है, भूमण्डलीकरण की प्रेरक–प्रभावक तो बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ हैं, जो सारी धरती को अपना बाज़ार मानती है ।

आज हिन्दी के साहित्यकार इस बाजारीकरण के खतरे को और मनुष्य तथा साहित्य के सामने उपस्थित बाजारवाद, मीडिया की चुनौतियों को गंभीरता पूर्वक देख परख रहे हैं । अब साहित्य का पाठक वर्ग घटते जा रहा है । लेकिन समाप्त तो नहीं हुआ है । कुछ भी हो आज इलेक्ट्रानिक मीडिया के कारण पढ़ने का अभ्यास कम हो गया है । कुछ भी हो लिखित साहित्य आज नहीं तो कल अपना गतवैभव फिर हासिल करेगा ही क्योंकि साहित्य के बिना समाज गूँगा रहेगा ।

आगामी पीढ़ी में साहित्याभिरुची बढ़ाने का एक छोटा प्रयास इस पत्रिका के द्वारा किया जा रहा है । यहाँ हमारे कॉलेज के नौसिखिया लेखकों के लेख एवं कविताओं का संकलन आपके सम्मुख प्रस्तुत है । इनको प्रोत्साहित करने से वे आगे समाज की चिंतन प्रणानी को आगे बढ़ाएँगे । इस वार्षिक पत्रिका में अपनी प्रतिभा आजमानेवाले सभी विद्यार्थियों को मैं विभाग की ओर से हार्दिक अभिनंदन करता हूँ ।

इस पत्रिका को सुंदर ढंग से प्रकाशित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए विभाग की प्राध्यापिका रोइसी रेखा ब्राग्स जी को भी धन्यवाद अदा करता हूँ । हिन्दी संघ को अध्यक्ष एम.ए. नदाफजी एवं उपाध्यक्षा संध्या सिरसीकर जी ने भी इस महत्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान दिया है उनको भी तहे दिल से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ

अध्यक्ष का संदेश

श्री महबूबअली अ. नदाफ
हिंदी संघ के अध्यक्ष

संत. अलोशियस महाविद्यालय का हिंदी विभाग छात्रों को पढने–लिखने के साथ–साथ को–करिक्युलर में भागलेने के लिए प्रोत्साहित करते आया है । जैसे अन्य महाविद्यालयों, संस्थाओं में आयोजित प्रतियोगिताएँ, विचार गोष्ठियों तथा कार्यशालाओं में भागलेने के लिए तैयार करना आदि ।

महाविद्यालय में कई विभागों के साथ को–करिक्युलर के लिए असोसियेशन बनाए हैं । हिंदी विभाग में छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए हिंदी संघ निरंतर कार्यरत रहता है । हिंदी संघ कई कार्यक्रमों का आयोजन करता है । जैसे वीकलि एक्टिविटीज, हिंदी दिवस, हिंदी उत्सव और कार्यशाला आदि का आयोजन करना । हिंदी दिवस के अवसर पर हमारे महाविद्यालय के छात्रों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है । हिंदी उत्सव में विभिन्न महाविद्यालय के छात्रों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है ।

हिंदी संघ की ओर से प्रति वर्ष प्रेरणा अंतर–महाविद्यालयी हिंदी उत्सव का आयोजन किया जाता है । इसमें विभिन्न महाविद्यालयों के छात्र भाग ले कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं । इस उत्सव में प्रेरणा वार्षिक पत्रिका का विमोचन किया जाता है । इस पत्रिका में विभिन्न अवसरों पर आयोजित लेखन स्पर्धाओं में विजेताओं के लेखन तथा लिखने में रुची रखनेवाले छात्रों के लेखन को प्रकाशित किया जाता है । इस उत्सव को सफल बनानेवाले आयोजक व प्रतिभागियों को और प्रेरणा के प्रकाशन में मदद करनेवाले सभी सहयोगी व नवसिखिया लेखकों को धन्यवाद ।

उपाध्यक्ष का संदेश

संध्या यु. सिरसीकर
हिन्दी अध्यापिका

हर सपनों को अपनी साँसों में रखो
हर मंजिल को अपनी बाहों में रखो
हर जीत आपकी हो

बस अपने लक्ष्य को अपनी निगाहो में रखो ।

प्रेरणा संत अलोशियस (स्वायत्त) के हिन्दी संघ का अंतर कॉलेज उत्सव है । जिसमें अनेक छात्र दिल से भाग लेते हैं और अपने हुनर की पहचान देने में कोई कसर नहीं छोड़ते । प्रेरणा पत्रिका इस उत्सव का एक भाग है जिसमें हमारे छात्र अपनी साहित्यिक प्रतिभा को दर्शाते हैं । अपने विचारों को लोगों तक पहुँचाने का सुअवसर पाते हैं ।

इस पत्रिका को तैयार करने में जितने भी हाथ जुटे है मैं उन सभी को धन्यवाद देती हूँ । आशा है कि हमारी यह 'प्रेरणा' पत्रिका बहुत से छात्रों में हुनर जगाएगी और अपनी उडान भरने में सहायक सिद्ध होगी ।

सचिव का संदेश

रीवा वियोला रोड्रिगस
सचिव, हिन्दी संघ

"परिंदों को उड़ने दो
उनके पंख कभी काटो नहीं
अपने खयालों को एक कलम दे दो
क्योंकि सोच की कोई सीमा नहीं"

आदरणीय्य प्राचार्य और गुरुजनों को मेरा प्रणाम। वर्ष 2017-18 का हिन्दी संघ की सचिव बनने का सौभाग्य मुझे मिला। इसके लिए मैं सबकी आभारी हूँ।

विज्ञान पदवी के प्रथम वर्ष से ही मैं हिन्दी संघ की सदस्या हूँ और हिन्दी संघ के सभी कार्यों में सक्रिय भाग लेते आयी हूँ।

हिन्दी संघ अपने आप ही एक ऐसा सम्मिलन है जो सभी विभाग चाहे, वाणिज्य, विज्ञान, कला हो, सबको जोड़ता है – अपनी 'हिन्दी' धारा से; और हिन्दी तो सदियों से जोड़ने का काम करते आयी है। कभी हिन्दी बोली के लोगों को जोड़कर हिन्दुस्तान बनाया तो कभी विदेशी भाषाओं को अपनाकर, अपने आँगन में समेटकर, एक–जुट रख लिया और देखिए इस 'प्रेरणा '2018' पत्रिका में मेरे विद्यार्थी मित्रों के विचार, अनुभव, ज्ञान को मिला दिया। इस पत्रिका को सुंदर ढंग से सजाने के लेखों को लिखकर मदद करनेवाले सभी के प्रति मैं आभारी हूँ।

प्रेरणा–2018 तो है ही 'एक कदम अपनी पहचान की ओर' जो विद्यार्थियों के प्रतिभाओं को दर्शाने का एक अव्वल मंच है। इस प्रेरणा–2018 के शुभ अवसर पर मैं प्रेरणादायक बात कहना चाहूँगी,

"अपनी प्रतिभा को कभी न छिपाओ,
अपने अरमानों को सच्च करने की हिम्मत रखो,
अपनी सोच को जुबान पर रखने का साहस करो,
अपने आप के लिए खड़े होने में कभी न हिचकिचाओ,
अपने अंदर की आग को कभी बुझने न दो;
क्योंकि, 'पंख' से सिर्फ परिंदे उड़ सकते हैं,
लेकिन 'हौंसले' से ही है हम सबकी उड़ान।"

समाज और किन्नर

किन्नर कौन है ?

किन्नरों की दुनिया एक अलग तरह की दुनिया है जिनके बारे में आम लोगों को जानकारी कम ही होती है । इसके अलावा किन्नरों पर न ही ज्यादा शोध किया गया है । भारत में बीस लाख से अधिक किन्नर है और निरंतर इनकी संख्या घट रही है, मगर फिर भी हिजड़े को संतान मिल ही जाती है ।

किन्नरों की अलग दुनिया:

मनुष्य के रूप में जन्म लेने के बावजूद किन्नर अभिशप्त जीवन जीने के लिए मजबूर है । किन्नरों के साथ होने वाले सामाजिक भेदभाव से उनका मनोबल टूटता है । उनके लिए न रोजगार की व्यवस्था है और न ही उनकी खुद की कोई परिवार जैसी इकाई है । सामाजिक भेदभाव की यह स्थिति समाप्त होनी चाहिए । क्यों समाज उनके प्रति लचीला रुख नहीं अपनाता ? सवाल बहुत से है लेकिन उत्तर नहीं ।

किन्नरों की आवाज़ कोई नहीं सुनता:

समय–समय पर दुनिया भर के विभिन्न मंचों पर मानवाधिकार उल्लंघन और मानवाधिकारों की बदतर स्थिति की चर्चा की जाती है, लेकिन कई मूलभूत सुविधाओं से वंचित और समाज की प्रताड़ना के शिकार किन्नरों की स्थिति पर बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है ।

किन्नरों का विकास:

तमिलनाडु में किन्नरों के विकास के लिए सरकार द्वारा एक बोर्ड का भी गठन किया गया है । वास्तव में इनकी बातों में एक पीड़ा है । जिसके अहसास से हमारा समाज कोसों दूर है । देश की आज़ादी को ६९ साल बीत गए हैं, लेकिन आज भी हमारे समाज का एक तबका आज़ादी के बाद मिले कई अधिकारों से वंचित हैं ।

कमीशन और किन्नर:

किन्नरों तक खबर पहुँचाने वाले को नयशुदा कमीशन भी मिलता है । किन्नर सरकार और समाज से सिर्फ इतना चाहते हैं कि समाज उनका मज़ाक न उड़ाए और न ही घृणा की दृष्टि से देखें, जबकि समाज के प्रति ऐसी सम्मानित भावना उपरांत भी किन्नर समाज में तिरस्कृत तथा बहिष्कृत है ।

अकेले हैं किन्नर:

इनके आधे अधूरेपन की वजह से भले ही समाज इन्हें अपना अंग मानने से इन्कार करते रहे, मगर वास्तविकता यही है कि ये समाज के अंग है । अंधे, कोढ़ी और उपंग लोगों की तरह किन्नर भी लाचार है जबकि किन्नरों को तिरस्कार व अपेक्षा की नहीं बल्कि प्यार और सम्मान देने की जरूरत है ।

मंगलमुखी:

किन्नर समुदाय के सदस्य स्वयं को मंगलमुखी कहते हैं क्योंकि ये सिर्फ मांगलिक कार्यों में ही हिस्सा लेते हैं मातम में नहीं हमारे समाज की सबसे बड़ी विशेषता है मरने के बाद हम मातम नहीं मानते हैं । हमारी समाज की सबसे बड़ी सोच यह है कि मरने के बाद हमें इस नरक रूपी जीवन से छुटकारा मिलेगा । यह अपने पैसों से कई दान कार्य करवाते हैं क्योंकि पुनः उन्हें इस रूप में जन्म ना लेने पड़े ।

किन्नरों का जन्म:

यह एक क्रोमोसोमल डिसीज है, अक्सर हमारे घर पर शादी–समारोह, फंक्शन, बच्चे या बच्चों का जन्म आदि कार्यक्रमों में किन्नर आते हैं और दुआएँ दे जाते हैं और बदले में हमसे नेग लेते हैं ।

कुछ रोचक तथ्य:

१) किन्नर की दुआएँ बुरे समय को दूर करती हैं इसलिए किन्नर से एक रूपया लेके अपने जेब में रखे इस से धन लाभ की प्रति होती है ।
२) पदी कुंडली में बुध ग्रह कमजोर हो तो किन्नर को हरे रंग की चूड़ी और साड़ी दान दे ।
३) किसी नए किन्नर को शामिल करने से पहले नाच–गाना और सामूहिक मोज किया जाता है ।
४) देश में हर साल किन्नरों की संख्या में ४०–५० हज़ार की वृद्धि होती है ।
५) एक मान्यता है कि ब्रह्माजी की छाया से किन्नरों की उत्पत्ति हुई है ।
६) हमारे देश में किन्नरों की चार देवियाँ हैं ।
७) किन्नर समुदाय में गुरु और शिष्य जैसी प्राचीन परम्परा आज भी है ।

किन्नरों की समस्याएँ:

- समाज और परिवार की लोगों से अस्वीकृति
- उनको पढ़ाई से वंचित किया गया है, शिक्षा, आरोग्य सेवा, सार्वजनिक स्थल आदि क्षेत्र से दूर रखा गया है ।
- उनको राजनीति और निर्णय लेने की प्रक्रिया से दूर रखा जाता है ।
- उन्हें अपनी मौलिक अधिकार से दूर किया जाता है ।
- उनके साथ रोशन, बलत्कार आदि उल्लंघन हो जाता है ।
- उनके साथ मानवाधिकार उल्लंघन होता है ।
- उनके परिवारों को उनके हाव–भाव पर अत्रास था, उन्हें तानाकशि का सामना करना पड़ता है । इस्से घुठन अनुभव होती है । उन्हें अपनी दिन गुजारने के लिए भीख माँगना पड़ता है ।
- जल्लता और अपेक्षा सहते हुए अक्सर उनके बचपन बीत पाया है ।
- लोग उन्हें चक्का कहकर संबोधित करते हैं जिस्ससे उन्हें उनका शोषण और बलत्कार होता है ।
- पुलीस लोग उन्हें ज्यादा तकलीफ़ देते हैं जैसे बाल खींचना, मारना । परिवार में अस्वीकृति समाज से हिंसा यौन शोषण और एक प्राकृतिक चीज़ के लिए उन्हें मुजरिम टहराया गया है । क्या किसी भी समाज को उन पर हो रहे अत्याचार को बरदाश्त करना चाहिए ?

उनका जिन्दगी उनका हक है । वह हमारे समाज के एक अनमोल हिस्सा है जैसे हम है, उन्हें भी पूरा अधिकार है इज्जत के साथ हमारे पास रहने की । वह हमारे देश के नागरिक हैं, उन्हें भी वहीं हक मिलना है जो हमें भी मिलता है । हमें हमारी सोच को बदलना चाहिए और इन्हें स्वीकार करना चाहिए

अमरा फातीमा, II C.B.Z.

रिश्तें

यह दुनिया बहुत बड़ी है,
इसमें बहुत से रिश्ते हैं ।
हर रिश्ते में बहुत खुशी है,
यह कोई झुठला नहीं सकता ।
पिता के जैसे सिख,
कोई न दे सकता ।
माता के जैसा प्यार,
कोई न कर सकता ।
यह रिश्ते बहुत अनमोल हैं ।
इन्हें कोई तोड़ नहीं सकता
चाहकर भी इनसे मुँह,
कोई मोड़ नहीं सकता ।

चारू चौधरी

नकारात्मक सोच से छुटकारा

हम सबकी जिंदगी एक गाड़ी की तरह है और इस गाड़ी का शीशा हमारी सोच, हमारा व्यवहार, हमारा नजरिया है। बचपन में तो यह शीशा बिल्कुल साफ़ होता है एकदम क्लियर। लेकिन जैसे–जैसे हम बड़े होते जाते हैं हमारे आस–पास की लोगों की वजह से, हमारे वातावरण की वजह से, हमारे अपनों की वजह से हमारा खुद के बारे में विश्वास बदलता जाता है।

जीवन में सुखी और सफल होने के लिए सकारात्मकता अवश्यक है। लेकिन जीवन में ऐसी घटनाएँ अथवा क्षण आ जाते हैं, जब न चाहते हुए भी मन में नकारात्मक विचार जन्म लेने लगते हैं। तब जीवन में सब कुछ व्यर्थ लगने लगता है। ऐसे में अगर नकारात्मक से तात्कालिक छुटकारा न पाया जाए, तो जीवन बेहद कष्टपूर्ण हो जाता है।

आप हमेशा सकारात्मक सोचवाले व्यक्ति को ही पसंद करते हैं। जब कोई व्यक्ति नया काम शुरु करता है तो सकारात्मक सोच लेकर चलता है। वहीं जब नकारात्मक सोच रखनेवाला कोई व्यक्ति आपके कार्य की सफलता पर संदेह उत्पन्न करता है और कार्य को मुश्किल भरा बताता है तब आप उसके विचारों की नकारात्मक ऊर्जा से दूर रहने की कोशिश करते हैं। लेकिन उसके बाद आपमें नकारात्मक सोच पैदा होने लगती है।

यू.एस.ए. नेषनल सैन्स फौंडेशन ने रिसर्च में पाया की हमारे दिमाग में आमतौर पर एक दिन में करीब पचास हज़ार विचार आते हैं। चौंकाने वाली बात यह है कि इनमें से ७० प्रतिशत से ८० प्रतिशत विचार नकारात्मक होते हैं। गणना करें तो एक दिन में करीब ४० हज़ार और एक साल में करीब १ करोड़ ४६ लाख नकारात्मक विचार आते हैं।

अब सवाल यह उठता है कि नकारात्मक विचार इतना अधिक आता क्यों है ? आदिकाल में मनुष्य गुफाओं में रहता था, जंगली जानवर और दैवीय आपदा से आतंकित रहता था, तब यही नकारात्मक सोच उसे उन कठिण परिस्थितियों से सचेत करती थी, जो जैविक विकास के क्रम में स्वयं को जिन्दा रखने के लिए प्राकृतिक प्रदत्त थी। दिमाग हमेशा कल्पनाओं के आधार पर नकारात्मक सोच पैदा करता है, जिससे उस समय के मनुष्यों को फायदा मिलता था। वर्तमान में मनुष्य में जेनेटिकली नकारात्मक विचार उसी कारण से आते हैं। रिसर्च में भी यह बात सामने आई कि नकारात्मक विचार और भाव दिमाग को खास निर्णय लेने के लिए उकसाते हैं। ये विचार मन पर कब्जा करके दूसरे विचारों को आने से रोक देते हैं।

नकारात्मक सोच तनाव व थकान के कारण पैदा होता है। तनाव हमारी सोच को काफ़ी हद तक प्रभावित करता है। नकारात्मक सोच से डिप्रेशन जैसी कई मानसिक बिमारियाँ होने की संभावना अधिक बढ़ जाती हैं। कुछ छोटे–छोटे उपाय करके आप नकारात्मक सोच को कम करके खुश रह सकते हैं। कई बार मन में आनेवाले नकारात्मक विचार हमें कुछ इस तरह घेर लेते हैं जिससे की हमारी सोच ही नकारात्मक होती जाती है और जीवन में सिर्फ निराशा ही दिखती है। नकारात्मक विचार मन में जितने अधिक होंगे अक्साद की समस्या भी उतनी बढ़ती जाएगी। ऐसे में इन्हें खुद से दूर रखने का हर संभव प्रयास करना जरूरी होता है। अगर आप भी अक्सर ऐसे नकारात्मक भावों से घिरा रहते हैं तो आपने भीतर छोटे–छोटे बदलाव करें और खुद को सकारात्मक दिशा में ले जाए।

पुराणों में भी लिखा गया है कि मनुष्य सर्वप्रथम खुद के प्रति उत्तरदायी होता है। हमारा पहला कर्तव्य

स्वयं के प्रति होता है इसका मतलब यह नहीं है कि हम स्वार्थी बन जाए लेकिन जब तक आप अपने आपसे प्यार नहीं करेंगे तब तक किसी को खुश नहीं रख सकते हैं । किसी का भी जीवन सामान्य नहीं है लेकिन अपने दुखों के लिए व्यक्ति की नकारात्मक सोच जिम्मेदार होती है । संघर्ष जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है । इसे भार और दुःख की तरह लेंगे तो भगवान का दिया यह सुंदर जीवन अभिशाप की तरह प्रतीत होगा ।

नकारात्मक सोच से बचने का उपाय

निर्णय लेना सीखें: नकारात्मक सोच की स्थिति में मजबूत से मजबूत व्यक्ति भी निर्णय नहीं ले पाता । ऐसे में छोटे–छोटे निर्णयों लें और उनपर अमल करें । ये न सोचें की आपके निर्णय का परिणाम क्या होगा, सिर्फ यह ध्यान में रहें कि एक बार अगर अपने किसी फैसले कर अमल किया तो वह एक अनुभव होगा और जीवन में कुछ न कुछ जोड़कर जाएगा ।

आत्मविश्वास से भरपूर रहे: आत्मविश्वास की कमी के कारण ज्यादातर लोग नकारात्मक सोच का शिकार होते हैं । हो सकता है कभी आपसे कुछ गलती हो गई हो लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप हमेशा गलत होंगे । अपने अंदर छिपे गुणों को पहचाने और इसे सबके सामने आते दें । अपने व्यक्तित्व को निखारने की कोशिश करें । बुरे से बुरे समय में भी अपने गुणों को याद रखें । कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं होता लेकिन हर किसी में अच्चाई–बुराई तो होती ही है । इसलिए अपनी कमियों को पहचाने पर अपने गुणों की अनदेखी न करें ।

आज में जिएं: ज्यादातर लोग अपनी पुरानी गलतियों या भविष्य की चिंता के कारण नकारात्मक सोच का शिकार होते हैं । लेकिन अच्छा होगा कि आप आज में जिएं अपनी पुरानी भूलों और गलतियों का शिकवा करने और अनिश्चित भविष्य के बारे में चिंता करने का कोई फायदा नहीं है । जब यह आपके नियंत्रण में ही नहीं है तो अपनी भावनाओं को खराब करने से कोई फायदा नहीं ।

नकारात्मकता और सकारात्मकता के दो पहलू:

- नकारात्मक विचार नया सीखने व नए संसाधन जोड़ने की क्षमता कम करते हैं । व्यक्ति में नकारात्मकता का स्तर अधिक होगा तो वह नए काम को सीख नहीं पाएगा, कमजोर में सफलता नहीं मिलेगी, सामाजिक संबंध भी नहीं बन पाएगा, इस तरह वह विकास की ओर नहीं बढ़ पाएगा ।
- सकारात्मक दृष्टिकोण के कारण आप अपने ही समान दूसरे सकारात्मक लोगों और विचारों के साथ जुड़ते हैं । कई दोस्त और अच्छे संबंध बनते हैं । संबंधों के सकारात्मक पक्षों को देख पाते हैं, जिससे आपसी संबंध मजबूर होते हैं और ऐसे व्यक्ति कामयाबी की सीढ़ी पर चढ़ते हैं । अपने विचारों समझें और उन्हें सकारात्मक विचार से बदलें और नकारात्मक शब्दों की जगह सकारात्मक शब्द बोलें ।

लिफ़्लिटा डिसोज़ा, II B.Com.

परिवार

अपनेपन की बगिया है
खुशाहली का द्वार,
जीवन भर की पूँजी है
एक सुखी परिवार,
माँ की ममता में बसता है
बच्चों का संसार
जीवन का रास्ता दिखलाए
बापू की फटकार,
दादा–दादी की बातों में
है जीवन का सार,
भाई–बहन का रिश्ता है
रिश्तों की आधार,
घर की लक्ष्मी बनकर पत्नी
देती है आकार
बहू जहाँ बन जाए बेटी
होता स्वर्ग वहाँ साकार,
अपनेपन की बगिया है,
एक सुखी परिवार । **चारू चौधरी**

मेक इन इंडिया

नयी दिल्ली में २५ सितंबर २०१४ को भारत में मेक इन इंडिया नाम से एक पहल की शुरुआत भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की गयी। इस अभियान का मुख्य लक्ष्य भारत को आर्थिक वैश्विक पहचान दिलाना है। इस कार्यक्रम के आरंभ के दौरान, पी.एम. ने कहा कि निवेशकों को इसे एक अवसर के रूप में देखना चाहिए ना कि भारत में बाज़ार के रूप में। सेवा–चालित वृद्धि माँडल से श्रम वृद्धिकर उत्पादन चालित वृद्धि से भारतीय अर्थव्यवस्था को नया रूप देना इस अभियान का लक्ष्य है। इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू करना भारत में १० मिलियन लोगों से ज्यादा के लिए रोज़गार का कारण बनेगा। ये एक असरदार योजना है जो यहाँ भारत में अपने व्यवसाय को लगाने के लिए प्रमुख विदेशी कंपनियों का आकर्षिक करेगी।

विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए, रक्षा उत्पादन और बीमा क्षेत्रों में बहुत बड़ा बदलाव किया गया है, हालाँकि विश्लेषकों के अनुसार इसे और असरदार तरीके से करने की जरूरत है। देस में ज्यादा रोजगार आम आदमी की क्रम शक्ति को बढ़ायेगा। भारत एक ऐसा देश है जिसके पास अलग तरह की जनसंख्यिकी, लोकतंत्र और माँग है जो निवेशकों को फायदा पहुँचा सकता है।

नीगिगत मुद्दों पर स्पष्टता और संसाधनों की कमी के कारण, भारतीय व्यापारी भी भारत को छोड़ने और अपना व्यापार कहीं और जमाने की योजन बना रहे थे। अगर ऐसा होता तो ये और खराब अर्थव्यवस्था का कारण बनता। विभिन्न असरदार संसाधनों के साथ मेक इन इंडिया अभियान किसी भी व्यापार के लिए भारत में निवेश के लिए विश्व के प्रमुख उद्योगपतियों का ध्यान खींचेगा। दूसरे देशों से भारतीय कारोबार की अनिवार्यता से बचने के लिए पी.एम. मोदी ने इस आकर्षक योजना की शुरुआत की। अपने असरदार शासन के द्वारा वृद्धि केन्द्रित योजगार और विकास लाने के द्वारा पी.एम मोदी का सपना इस देश को बेरोज़गारी मुक्त बनाने का है। युवाओं के लिए बेरोजगारी की समस्या का समाधान करने के द्वारा भारत में बड़े स्तर पर गरीबी को घटाया जा सकता है जिसकी वजह से कई सामाजिक मुद्दे सुलझ सकते हैं

विजेष्मा के.एन., I B.Sc.

शायरी

बड़ी चालाक होती है
जिन्दगी हमारी
रोज़ नया कल देकर,
उम्र छीनती रहती है? !
एक रास्ता यह भी है?
मंजिलों को पाने का?
कि सीख लो तुम भी हुनर
हाँ में हाँ मिलाने का?

कामयाब होने के लिए अकेले
ही आगे बढ़ना पड़ता है, लोग
तो पीछे तब आते हैं जब हम
कामयाब होने लगते हैं...
जिनमें अकेले चलने के
हौंसले होते हैं,
एक दिन उनके पीछे ही
काफिले होते हैं !

प्राप्ति जैन, I B.Sc.

स्वतंत्रता के ७० वर्षों के बाद भी, नेहरू युग से मोदी काल तक, आज के ग्रामीण भारत अभी भी बुनियादी सुविधाओं, पेयजल, बिजली, सड़कों आवास, भोजन और कपड़ों से ज्यादातर लोग वंचित हैं । एक बार गाँधीजी ने प्रसिद्ध लेखक श्री मुल्क राज आनंद को बताया कि जब तक हम गाँवों का निर्माण नहीं करते हैं, तब तक हम भारत का निर्माण नहीं कर सकते । गाँधीजी गाँवों को स्वतंत्र गणराज्यों, शासन में स्वतंत्र और नियमित आवश्यकताओं के लिए, गाँव के लोगों द्वारा शासित और स्वयं के लिए पर्याप्त वित्तीय अवश्यकताओं । भारत में हमारी आबादी का सत्तर प्रतिशत गाँवों में रहते हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए विकास योजनाएँ आवश्यक प्राथमिकताओं को नहीं दी जाती है ।

हमारी अर्थव्यवस्था तेजी से विकास कर रही है, उद्योग और बड़े कॉपोसिट विश्विककरण हो रहा है, उदारीकरण के साथ, विनिर्माण क्षेत्र में भारी बदलाव महसूस किया जा रहा है, लेकिन कोई भी ग्रामीण विकास के बारे में सोच भी नहीं रहा है क्योंकि इन क्षेत्रों के रूप में इसे तेजी से बना दिया है । तो यह सब क्या प्रगति और विकास का मतलब है ? पहले से विकसित और गरीबी से ऊपर कुल जनसंख्या में ३०% तक लाभप्रद होने का मतलब किसी भी विकास के लिए नहीं है ।

आज भी गाँव में जाकर हम पाते हैं कि मदिरा, बाँस और घास से बने घरों में बारिश, तूफान, नमी और आग के खिलाफ़ कोई सुरक्षा नहीं होती है । पर्याप्त पीने के पानी की अपूर्ति एक कठिन समस्या है जिसमें गृहिणी और लड़कियाँ दैनिक दिनचर्या के बड़े हिस्से को समर्पित कर रही हैं । कुछ राज्यों ने मिड–डे मील स्कीम के प्रोत्साहन के साथ स्कूलों में बच्चों को नामांकन और आकर्षित करने की कोशिश की, लेकिन प्राथमिक शिक्षा का एक ही सार्वभौमिकरण अभी भी एक सपना है और वार्षिक ड्रॉप बहिष्कारों की संख्या में गिरावट नहीं है । ग्रामीण गरीबी और निरक्षरता ने हमारे देश को संदिग्ध नाम दिया है जहाँ दुनिया में सबसे ज्यादा संख्या में बाल श्रमिक इस पेट को खिलाने के लिए काम कर रहे हैं ।

स्वास्थ्य देखभाल सिर्फ अल्पविकसित है और कुछ डॉक्टर काम करने को तैयार हैं । ग्रामीण क्षेत्र गाँववाले वैद्या या अन्य आरएमपी पर अधिकतर निर्भर हैं, जो उनकी चिकित्सा आवश्यकताओं के लिए हैं । सड़कों, बिजली, शैक्षिक विद्यालय जैसे उचित बुनियादी ढाँचे का अभाव एक व्यक्ति को प्रेरित करता है, चाहे डॉक्टर या किसी शिक्षित कर्मियों को गाँवों में जाने और अपने परिवार के साथ रहने के लिए । गाँवों के पास के शहरों या महानगरों में प्रवास की उच्च दर भी ग्रामीण इलाकों में उचित बुनियादी की कमी का परिणाम है । शहरों में भूखे भूख भरने के लिए कमा सकता है ।

ग्रामीण उत्थान के लिए कई अन्य कदम उठाए गए हैं । कृषि आय को आयकर और संपत्ति कर से छूट दी गई है । जमीन्दारी प्रणाली को समाप्त कर

दिया गया है । हाल ही में जवाहर रोजगार योजना को २६ अप्रैल १९८९ से शुरु किया गया है । इस योजना के वहत ३०% रोजगार पैदा करने के लिए महिलाओं के लिए आरक्षित किया जाएगा । ग्रामीण इलाकों में गरीब परिवार के कम से कम एक सदस्य को एक वर्ष में ५०–६० दिन के लिए रोजगार दिया जाएगा, ताकि वह अपने निवास के पास रोजगार प्रदान कर सकें ।

इसके अलावा एक अन्य कार्यक्रम अर्थात् एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम (आई.आर.डी.पी.) सरकार द्वारा १९८९ में शुरु किया गया है । इसका लक्ष्य है कि अतिरिक्त रोजगार का, निर्माण करना । इस कार्यक्रम को लॉन्च करने के लिए ग्रामीण गरीबों के लिए बेहतर सैदा के रूप में व्यापक रूप से स्वागत किया गया ।

यह परियोजना सरकार और जनता के बीच एक सड़क बनाने पर केन्द्रित है, जो यात्रा करना मुश्किल नहीं होगी, यहाँ पर सरकारी सेवाएँ, एक क्लिक द्वारा जनता के दरवाजे तक पहुँचेंगी ।

प्रमुख विचार शहरी प्रौद्योगिकी के साथ ग्रामीण क्षेत्र को जोड़ने के लिए है, साथ ही दूरदराज के गाँवों को ई–सेवाएँ प्रदान करने के लिए भी बहुत दयालु काम करता है, जिसमें बहुत सारे आधिकारिक काम शामिल होते हैं, अब यह सब बहुत ही खुशल समय और कम श्रम सिर्फ अपने फोन की लंबाई में यह काम खुद श्री मोदी द्वारा निगरानी रखता है ।

यह परियोजना उन गाँवों के लिए सबसे उपयोगी है, जो देश के दूरदराज क्षेत्र में बस गए हैं या शहरी इलाके से बहुत दूर हैं, इस परियोजना से उच्च गति वाली इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराने के जरिए अपना समय उपयोग कम हो जाएगा, जो अब ग्रामीणों को सभी काम करने देगा । बस एक क्लिक से और शहरी कार्यालय बंदरगाहों की यात्रा से बचें ।

यह स्वास्थ्य सेवाओं और सुरक्षता को अधिक पहुँच योग्य बना देता है क्योंकि कोई व्यक्ति ई–हॉस्पिटल सेवाओं का उपयोग कर सकता है, ऑनलाइन पंजीकरण कर सकता है, शुल्क का भुगतान कर सकता है, निदान परीक्षणों को ऑनलाइन, रक्त, चेक–अप आदि प्राप्त कर सकता है ।

भारत सरकार ने डिजिटल इंडिया अभियान नामित एक अभियान इंटरनेट कनेक्टिविटि में सुधार के जरिए ऑनलाइन रूपरेखा में सुधार करना है, यह कार्यक्रम भारत के नागरिकों को आसान ऑनलाइन सरकारी सेवाएँ प्रदान करना है और इंटरनेट नेट वेब को सशक्त करके भारत के तकनीकी पहलू को बेहतर बनाने के लिए है ।

२ जुलाई २०१५ को शुरु किया गया यह आवश्यक है कि कोई भी जानकारी हासिल करने के लिए हाई–स्पीड इंटरनेट नेटवर्क के साथ ग्रामीण लोगों को लिंक करना है । डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार, डिजिटल सेवाएँ देने और डिजिटल साक्षरता डिजिटल इंडिया अभियान के तीन प्रमुख पहलू हैं ।

डिजिटल रूप से विअरित सेवाओं से इस प्रणाली से जुड़े सभी लोगों को सुविधा मिल जाएगी और जैसे ही वे शुरु किए जाते हैं और जब इसकी आवश्यकता होती है, तब तक सरकारी योजनाओं और नीतियों के लाभ मिलेगा । यह ऑनलाइन व्यवसाय को भी बढ़ावा देगा क्योंकि यह विद्युतीकरण और क्लासलेस लेनदेन से वित्तीय लेनदेन आसान बनाता है । यह वैश्वीकरण में मदद करता है क्योंकि यह एक व्यक्ति को अपने फोन या कंप्यूटर स्क्रीन के माध्यम से पूरी दुनिया से कनेक्ट करता है, यह कागज की लंबाई में दस्तावेजों को बनाए रखने से बचना होगा ।

यह परियोजना सभी को इ–सेवाओं को बढ़ावा देने के द्वारा देश के विकास को आसान बनाता है और हम देख सकते हैं कि उसने कई सरकारी सेवाओं को सभी के लिए इस्तेमाल किया है । ई–क्रांति को प्रोत्साहित करना, आईटी नौकरी उपलब्ध कराने और नागरिकों को अपनी सरकार के हाथों लंबाई से जोड़ना है ।

सग्रीना जे.वै., II B.Sc. (PCM)

ज्ञान का सबसे बड़ा शत्रु अज्ञानता नहीं बल्कि ज्ञान का भ्रम है

जब इंसान जानने लगता है कि वह कुछ नहीं जानता है तब ज्ञान का आरम्भ होता है ।

– अनामिका

हमारे पुरखो ने कहा है कि ज्ञान ही एक ऐसी चीज़ है जो बाँटने से घटती नहीं, धारण करने से भार का आभास न होवे, चोर जिसे लूट न पायें, उपयोग करने से वर्धित होवे, इसलिए ज्ञानधन ही सभी धर्मों में श्रेष्ठ है । इसलिए सभी को हर पल ज्ञानप्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए । ज्ञान ही सभी दुःखों का एकमात्र निवारण साधन है, वही मोक्ष का निजपथ है । ज्ञान खुद में वर्तमान है, इन्सान सिर्फ उसका अविष्कार करता है । जैसे प्रेम हमें परिपूर्णता देता है वैसे ही ज्ञान हमें श्कति देता है । ज्ञान के समान कोई आँख नहीं है । इसीलिए वेदों में कहा गया है ?न हि ज्ञानेन सहशं परित्रमिह विद्यते ।? अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र विचार कोई दूसरा नहीं ।

बहुत ही सरल शब्दों में कहा जाए तो ज्ञान का मतलब यथास्थिति या वास्तव से अवगत होना है । यह वास्तव किसी घटना से लेकर विश्व के अस्तित्व तक का हो सकता है । अतः सत्य की खोज ही ज्ञान है ।

सदियों से यह दुनिया ज्ञानियों को पूजती आयी है, उनको सबसे ज्यादा आदरणीय मानना इस संसार की पृथा है । शायद इसलिए प्रपंच का हर कोई व्यक्ति ज्ञानी बनना चाहता है ।

परन्तु यह इतना आसान नहीं कि हर कोई ज्ञान प्राप्त कर सके । इन्सान की आयु मात्र शत वर्ष है और इस धरती पर ज्ञान से जुड़े विचार हैं अगणित । इस का अर्थ यह है कि कोई भी मनुष्य इस प्रपंच में से सारा ज्ञान नहीं ले सकता । बहुत परिश्रम और प्रयास के बाद एक दो या तीन चार विषयों में वह माहिर हो सकता है । अगर बहुत ही बुद्धिमान तथा विमर्शात्मक जिज्ञासा रखनेवाला हो तो बहुत सारा ज्ञान प्राप्त करने की संभावना होती है, लेकिन कोई सर्वज्ञ नहीं है । अनुभव से चीज़ों का थोडा बहुत ज्ञान आ ही जाता है परन्तु हर एक विषय में बारीक जानकारी होना असंभव है ।

अतः इस नज़रिए से देखा जाए तो हर व्यक्ति बहुत सारे विचारों में अज्ञानी ही रहता है, जैसे दुनिया में ढेर सारी भाषाएँ हैं किन्तु हर कोई किसी न किसी भाषा ही जानता है; सारी की सारी कोई नहीं जानता, जैसे एक वैद्य जितना अपना काम बारीकी से जानता है उतना एक वकील की तरह कानून की धाराएँ सूक्ष्मता से नहीं जानता । एक वैज्ञानिक अंतरिक्ष में जानेवाला उड़ान बनाता है तो एक किसान सब का पेट भरने वाला अनाज़ उगागा है । इस तरह प्रति व्यक्ति अपने आयुर्मान में स्वयं ने प्राप्त किये हुए ज्ञान से समाज में दूसरों की मदद करता है और बदले में दूसरों की मदद से जीता है । इसका मतलब यह है कि हर मनुष्य ज्ञान के हर पहलू पर रोशनी डाल नहीं पाता । अब क्या हम यह मतलब निकाले कि हर मनुष्य अज्ञानी है ! नहीं, हमें कौनसे विषय में ज्ञान है और कौन्से विषय में नहीं

यह समझना ही ज्ञान–अज्ञान में फर्क समझनेवाला महत्वपूर्ण पढ़ाव है । अपनी अज्ञानता का अहसास होना ज्ञान की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम है । ज्ञान एक खज़ाना है, और अभ्यास इसकी चाबी है । जो अपने और दूसरे की पात्रता समझ गया और उसके हिसाब से अपना और दूसरे के ज्ञानी होने का अहसास पा गया समझो उसकी आँख खुल गई ।

हम रोज़ अपने आसपास बहुत ऐसे लोगों को देखते हैं जो मानते हैं की उनको सब पता है । इस भ्रम में वे लोग इस ब्रह्माण्ड में जो भी चल रहा है, जितने भी विषय वस्तु हैं उन सभी पर अपनी राय बाँटते फिरते हैं । शायद उसकी वजह मनुष्य की अज्ञानता के प्रति डर ही है । हम सभी पता नहीं, शब्द के इस्तेमाल से शर्माते हैं, घबराते है, डरते हैं क्योंकि हमने मान लिया है कि अज्ञानता का प्रदर्शन मूर्खता का प्रतीक है । सो कभी भी अपनी अज्ञानता का प्रदर्शन मत करो, भले ही तुम कुछ न जानते हो, पर ज्ञानी की तरह पेश तो आओ, जिससे तुम्हारा सम्मान बढ़ेगा ।

पर वास्तव में यह व्यवहार कथैव अनुचित है । सही मायनों में ?पता नहीं? का अर्थ आदमी का विनम्रता तथा ज्ञान की तरफ उसका गौरवपूर्ण दृष्टिकोण व रवैये का प्रतीक है । ?पता नहें ? बोलकर कोई छोटा नहीं हो जाता । बल्कि यह समझ में आता है कि उसे यह पता है कि उसे क्या पता है और क्या नहीं ।

अगर किसी को यह स्पष्टता ही नहीं कि उसे क्या पता है और क्या नहीं और इस भ्रम में जी रहा है कि मुझे सब कुछ पता है, यह मनःस्थिति व्यक्ति तथा समाज के लिए आतंककारी बन सकती है । आधी अधूरी जानकारी या गलतफेमी व्यक्ति को सही दिशा से भटका सकता है । एक घटना, विचार अथवा परिस्थिति को निरपक्षपाती नज़रिए से देखने की क्षमता न रख पाना, तथा विमर्शात्मक दृष्टिकोण का अभाव एवं अपने सकल शास्त्र पारंगत होने के भ्रम में जो अपने आपने सोचा वही पूर्णतः सत्य मानकर पूर्वग्रस्त मनःस्थिति में असर्म्पक निर्णय लेना एवं अपने विचार दूसरों पर थोपना केवल ज्ञान के भर्म में ही हो सकता है जो ज्ञान के प्रति अपना आँख मूँदकर ज्ञान की रोशनी पर प्रतिरोध लगाता है ।

अतः ज्ञान क सबसे बड़ा सत्रु अज्ञानता नहीं बल्कि ज्ञान का भ्रम ही है । इसलिए हर इन्सान को चाहिए कि वह ज्ञान की तरफ बढ़े, सत्य की खोज करे तथा विमर्शात्मक एवं निरपक्षपात सोच रखे और अपने आपको दूसरों के जगह पे रखकर सोचे । अपने अहंभाव को त्यागकर, मन से स्वार्थ को हटाकर, जो न्याय अपने लिए सही है वही दूसरों के लिए भी उचित समझनेवाला मनुष्य ही ज्ञान के भ्रम से मुक्ति पाकर निजपथ में चलने का वर्चस्व रखता है । वही पुरुष इस संसार में पुण्य एवं कीर्ति पाकर ज्ञानी कहलाता है तथा सारे बंधनों से मुक्त होकर आनंदमय जीवन व्यतीत करता है ।

अतः हम सभी को ज्ञान का भ्रम छोड़कर, जो ज्ञान का शत्रु है, सात्विक ज्ञान की तरफ बढ़ना चाहिए जो हमें आदर्श, मौलिक एवं संतुष्ट इन्सान बनाता है । हम सभी का प्रयास सदैव इस दिशा में रहना चाहिए कि हम भ्रम या अहंकार में न जीकर शाश्वत सत्य में जिए जिसके अस्तित्व को किसी और की जरूरत कभी नहीं पड़ती क्योंकि ज्ञान ही सत्य है, सत्य ही शिव है और शिव ही सुन्दर है ।

अनुश्री भट्. एम, I B.A.

अनौपचारिक शिक्षा का महत्व

मनुष्य जब पैदा होता है तो वह केवल जैविक प्राणी होता है, परन्तु जल्द ही वह एक सामाजिक प्राणी में बदलाव उसमें सामाजिक व शिक्षा की प्रक्रिया के द्वारा होता है । शिक्षा समाज की एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है । इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा स्थानों, विद्यालय, महाविद्यालय में सुनियोजित ढंग से चलनेवाली एक सामाजिक प्रक्रिया है । इसके द्वारा छात्र निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर अनेक परीक्षओं को उत्तीर्ण करता है ।

शिक्षा के साथ छात्रों को अनौपचारिक शिक्षा का भी आवश्यकता है । शिक्षा का मूल उद्देश्य एक बच्चे का सर्वांगीण विकास । सर्वांगीण विकास तभी संभव होगा जब बच्चे को शिक्षा के साथ–साथ अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त हो । इसी उद्देश्य से रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शांतिनिकेतन की स्थापना किया था । अनौपचारिक शिक्षा द्वारा छात्र मिलजुलकर रहना, हार–जीत को एक समान देखना और नेतृत्व आदि गुण सीखता है।

भूमिका, I B.Sc.

आलोक

जिसने जगाई कण–कण में जीने की चाह
हरी–भरी, मंत्रमुग्ध बनाई जिसने हर राह
पाए शीतल, छाँव जिसमें हर एक जीव
जिसने रखी पृथ्वी पर जीवन की नीव

सहर्ष जिसने हर विष को अपने में समाया
ममता भरी गोद में अपनी बच्चों को खिलाया
आसमान की मनोहर बूंदों को धरती पर बुलाया
जिसने मानव को अपनी जड़; मि ी से मिलाया!

कृतघ्न हो उसी कुदरत का कर रहा हू विनाश
न जाने तुझे सता रही किस चीज़ की तलाश ?
इस पवित्र सृष्टि की कद्र कब करेगा रे इंसान ?
कब खुद से ज्यादा कुदरत को समझेगा महान ?

अबोध और अनजान है तू; दयनीय तेरी यह दशा
कोई तुझे समझा न पाए, तेरे सर चढ़ा है नशा
नहीं देख पाता तू भविष्य, होकर इतना सुजान !
तभी न दे पाता तू अपनी जननी को सम्मान

जब पानी की बूँद को तरसेगा तू प्यासा मानव
थोड़ी बची अच्छाई भी भूल, बन जाएगा दानव
जब निर्मल हवा न होगी, तब कैसे लेगा साँस?
क्या अपनी भूख मिटाएगा तू खाकर रिर्फ माँस?

तपती धूप में जब जरूरी होगी पेड़ों की छाया
व्याकुल चित्त, खत्म होगी जब पैसे की माया
सूखा पड़ जब धरती बन जाएगी रेगिस्तान
तब जाकर शायद समझोगे; कुदरत का वरदान!

जैसे जब निरीह दिल से छिन जाए धड़कन
कैसे तब पल भर में रुक जाता है जीवन !
वैसी है हमारी कुदरत की भी अहमीयत
जिसे कभी न खरीद पाए कोई भी दौलत !

अनुश्री भट्. एम, I B.A.

कहानी लिखते बनी एक कहानी

समझकर अपने आपको ज्ञानी, लिखने चली एक कहानी। जब लिखने चली कुछ अच्छी कहानी, बन गयी देखो अज्ञानी पर एक कहानी। यह कहानी मेरे खुद के अनुभव पर आधारित है। मेरा हमेशा सा ही एक सपना था कि मैं एक कहानी लिखू। पता नहीं क्यों मेरे मन में एक विचार था कि मैं एक लेखिका बन सकती हूँ। मैं ने कहानी लिखने का दुस्साहस नहीं किया था।

पर एक दिन मेरे मन में एक धातक विचार आ गया। मुझमें एक ऐसी स्फूर्ति उत्साह आ गयी की कहानी की न कोई सोच थी। न कोई विचार, फिर भी कहानी लिखने शुरु किया।

स्वच्छ कागज़ मेरे सामने था, कलम मेरे हाथ में था। बस लिखना ही बाकी था। उसे मैंने एक नाम दिया मेरी कहानी। नीचे मेरा एक हस्ताक्षर डालके गर्व भावना के साथ आगे बढ़ने लगी। ऐसे लिखने के बाद कुछ सूजा ही नहीं। ?सोचा? सोचकर मैं परेशान, स्वच्छ बैठकर कागज़ परेशान, बिना लिखे कलम परेशा।

मिनटों तक कुछ न सूजने पर अज्ञानी के कहानी लिखने की तमन्ना कम होती गई। कुछ मिनटों बाद कहानी लिखने की तमन्ना चल बसी। आज भी जब वो कागज़ मैं देखती हूँ, मेरे चेहरे पर एक मुस्कान आ जाती है।

जोयलिया इशा ग्जेवियर, I B.Sc.

फूल

क्यों है वे इतने उदार?
अपने विनाशकों के हाथों को भी सुगंध से भर देते हैं।
संसार भर के जुल्म सहकर भी, प्रतिदिन
खिलकर मन को शांति देते हैं।
सारे काँटों को अपने पास रखकर
देते हैं वे केवल मनमोहक फूल।
बनो आप भी उनकी तरह निराले
दर्दे के बदल खुशी देने वाले
इस संसार का अपूर्व विस्मय बनो।
पीड़ा को अपने पास रखकर, केवल अपना प्रेम बाँटो।
देखो कैसे संसार तुम्हारी शरण में आएगा

इंतज़ार

इंतज़ार तो बहुत किया उस सुबह
के लिए तो वह लंबी रात लेकर आएगा।
लेकिन इंतज़ार करते करते उस रात
के तारें देखने ही भूल गई।

सूरज का प्रेम

शिकायत तो बहुत थी उस सूरज से
जिसकी रोशनी ने सितारों को चुपाया था।
लेकिन जब रात हुई तब समझ आया उसकी कुरबानी,
जो मरा हर रात ताकि साँसी ले सके उसके चंद्रमा।

अग्नि

हर शरीर ने उसकी गर्मी से नफरत किया और उसकी निंदा की,
केबल आत्मा जानती थी चिंगारी का आनंद।

अम्रा फातिमा, II B.Sc.

बचपन

छीनकर खिलौनों को बाँट दिये गम ।
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम ।
अच्छी तरह से अभी पढ़ना न आया
कपड़ों को अपने बदलना ना आया
लाद दिया बस्ते है भारी–भरकम
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम
अंग्रेज़ी शब्दों का पढ़ना–पढ़ाना
घर आके दिया हुआ काम निबटाना
होमवर्क करने में फूल जाये दम
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम ।

देकर के थपकी न माँ मुझे सुलाती
दादी है अब नहीं कहानियाँ सुलाती
बिलख रही हकैद बनी, जीवन सरगम
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम ॥

इतने कठिन विषय की छूटे पसीना
रात दिन किताबों को घोट–घोट पीना
उस पर भी नम्बर आते हैं बहुत कम
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम ।

विनोलिया, II B.A.

हिन्दी अध्यापक

बाएँ से बैठे:
श्रीमती. संध्या यु सिर्सिकर, सुश्री. रोइसी रेखा ब्राग्स, डॉ. मुकुन्द प्रभु, श्री. एम. ए. नदाफ़

हिन्दी संघ के संयोजक

बाएँ से बैठे:

श्री. शाहिम, श्रीमती. संध्या यु सिर्सिकर, श्री. एम. ए. नदाफ़, सुश्री. रीवा रोड्रिगस

कृतज्ञता

गतवर्ष के हिन्दी संघ के सचिव

श्री. डेल्सन लोय डिसोजा

सुश्री. रचना कोटियान

संघ की गतिविधियाँ

प्रेरणा – २०१७

प्रायोजक

सुश्री. वीरा लोबो

सुश्री. विजया लोबो

श्री. उल्लास सिक्वेरा

श्री. क्रिथिन

श्री. नागेश

श्री. अनिल लोब, प्रोप. अक्रती

आर्किटेक्ट्स एंड इन्टिरीर डिज़ाइनरस

श्री. सुजय लोबो, प्रोप. बेसिक डिज़ाइन्स

इन्टिरीर डिज़ाइनरस

श्री. प्रवीण आल्वा, प्रोप. रिटोक्स लाउंज

श्री. विजय लोबो, प्रोप. शेफ़्स रेस्टोरेंट

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार
Dept. of O. L., Ministry of Home Affairs, Govt. of India
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंगलूरु
सत्यमेव जयते Town Official Language Implementation Committee, Mangaluru
संयोजक

अनुच्छेद 350 क. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं--

प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।

अनुच्छेद 350 ख. भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकारी--

भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए एक विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति नियुक्त करेगा। विशेष अधिकारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए उपबंधित रक्षोपायों से संबंधित सभी विषयों का अन्वेषण करे और उन विषयों के संबंध में ऐसे अंतरालों पर जो राष्ट्रपति निर्दिष्ट करे, राष्ट्रपति को प्रतिवेदन दे और राष्ट्रपति ऐसे सभी प्रतिवेदनों को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और संबंधित राज्यों की सरकारों को भिजवाएगा।

कार्पोरेशन बैंक Corporation Bank
A Premier Public Sector Bank